वर्षम् - ०४ अङ्कः – ०४ शोधज्योतिः
जनवरी – दिसम्बर, 2022 ISSN-2350-0700

कदली का सांस्कृतिक, काव्यात्मक एवं वैज्ञानिक अनुशीलन

डॉ. धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी[१]

सारांश -

भारतीय परम्परा में पादपों का सर्वविध महत्त्व प्राचीनकाल से ही ज्ञात है। उन्हीं पादपों में कदली का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। निघण्टुग्रन्थों में कदली के विविध पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख प्राप्त होता है जिससे उसके आकृतिविज्ञान, वैशिष्ट्य तथा द्रव्यगुण का ज्ञान होता है। विभिन्न ग्रन्थों में इसके आरोपण पद्धति की विस्तृत चर्चा प्राप्त होती है। सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से कदली का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। पर्व-त्योहरों के अवसर पर इसका प्रयोग विशेष रूप से देखने को प्राप्त होता है। कदली से सम्बन्धित अनेक व्रत इसके महत्त्व को रेखाङ्कित करते हैं। कवियों ने कदली के विवेचन से अपने ग्रन्थों को समृद्ध किया है। महापुराणों, निघण्टु ग्रन्थों तथा वैद्यक ग्रन्थों में इसके औषधीय गुणों का विवेचन प्राप्त होता है जो अत्यन्त लोकोपयोगी है।

भूमिका-

भारतीय परम्परा में कदली का महत्त्व सर्वविदित है। सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से तो इसका महत्त्व है ही, औषधीय दृष्टि से भी इसकी उपयोगिता वैद्यक ग्रन्थों ने प्रतिपादित की है। काव्यसौन्दर्य के उत्कर्ष के लिए भी कवियों ने कदली का आश्रय लिया है। लोकपरम्परा में भी इसका प्रभूत प्रयोग प्राप्त होता है। यह उष्णकटबन्धीय जलवायु क्षेत्रों का एक विशिष्ट फल है जो प्रायः सभी प्रान्तों में प्राप्त होता है। इसके पत्र दीर्घकाय एवं मुलायम होते हैं। इसी कारण वे वायु के झोकों के कारण स्थान-स्थान से फट जाते हैं। प्राचीन काल से ही अनेक स्थानों पर इसके पत्रों पर भोजन किया जाता है। इसका फल अपक्वावस्था में कषाय और पक्वावस्था में मधुर हो जाता है। अतः इसकी गणना मधुर फलों में ही की जाती है।

कदली का रासायनिक संघटन –

[१] *अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची-834002 ई-मेल-dvd1309@gmail.com, dvd74@rediffmail.com मोबाईल-7992362827, 9431590113*

केले के पञ्चाङ्ग की राख में पोटाशियम होता है। कच्ची अवस्था में इसमें टैनिन होते हैं। पक्वफल में शर्करा, विटामिन 'सी', कुछ 'बी', खनिज द्रव्य एवं अन्य द्रव्य होते हैं।[२] इसके पुष्प में डोपामाइन, डोपानोराड्रेनालिन, कैपिक अम्ल, सिनामिक अम्ल, पी-कामरिक अम्ल, गैलिक अम्ल, प्रोटोकेटेचुइक अम्ल, कम्पेस्टेराल, स्टीग्मास्टीराल, सायक्लोम्यु सेलेनाल, सायक्लोम्यु-सेलेनान तथा ग्लायककोसाइड्स, पक्व फलों में पोटेशियम, कैल्शियम, मेग्नेशियम, कापर, लोह, फोस्फोरस, गन्धक, आयोडिन, जिन्क, कोबाल्ट, सिट्रीक अम्ल, मैलिक तथा ओक्सेलिक अम्ल पाये जाते हैं।[३]

कदली का आरोपण

वृक्षायुर्वेद के अनुसार कदली वृक्ष को अनूप प्रदेश में लगाना चाहिए।[४] कदली वृक्ष का जब रोपण किया जाए तो उनके मूल में गाय के गोबर का भलीभाँति आलेपन करना उत्तम होता है। उनको जड़ों सहित खड्डों में सावधानी के साथ लगाना चाहिए और समय-समय पर पर्याप्त पानी देना चाहिए।[५] कदली की जड़ों को यदि सड़ाए गए भूसे की राख और गाय की गोबर का खाद दिया जाए तो वे प्रभूत मात्रा में बृहदाकार फल उत्पन्न करने लगते हैं।[६] चावल और गाय के गोबर से बनी राख कदली के लिए अच्छी होती है।[७] वैशाख मास में शुक्रवार को कदली का रोपण करने वाले को बुद्धिमान कहा गया है।[८] कदली की जड़ों को लगाने के लिए एक गड्ढा बनाया जाना चाहिए। कदली की जड़ों के रोपण में सभी कृषि कार्यों जैसे कि जुताई आदि को कुशलता से व्यवस्थित करना चाहिए और कृषि क्षेत्र के विशेषज्ञों के परामर्श का पालन करना चाहिए। इससे अच्छे परिणाम मिलेंगे।[९] कदली के लिए बीज बोना ग्रंथों द्वारा अनुशंसित नहीं किया जाता है।[१०]

कदली की खेती सर्वदा लाभप्रद होती है। इसकी कई किस्में बताई गई हैं। कृषि विशेषज्ञों को क्षेत्रीय अभ्यास के अधीन सभी ऋतुओं में कदली की खेती करनी चाहिए। इसे देश में कहीं भी हमेशा लाभप्रद बताया गया है।[११]

---

[२] *भावप्रकाशनिघण्टु-आम्रादिफलवर्ग/पृ.557*

[३] *आयुर्वेद का प्राण : वनौषधि विज्ञान-पृ. 304*

[४] *वृक्षायुर्वेद-41*

[५] *तत्रैव-82*

[६] *तत्रैव-138*

[७] *विश्ववल्लभ-7/29*

[८] *वृक्षायुर्वेद-89*

[९] *काश्यपीयकृषिसूक्ति-1/420, 426-427*

[१०] *तत्रैव-1/588*

[११] *तत्रैव-1/596-597*

विवेकशील किसान को कल्याण सुनिश्चित करने के लिए कदली उगानी चाहिए। कभी-- कभी किसी पहाड़ की चोटी पर या किसी पहाड़ी के शिखर पर और कभी-कभी भूमि की गुणवत्ता का परीक्षण कर कठोर भूमि पर भी कदली उगायी जा सकती है। यह सर्वदा और प्रत्येक स्थान पर लाभप्रद होता है, ऐसा विशेषज्ञों के द्वारा कहा गया है। परन्तु किसी भी स्थिति में इसे खारी मिट्टी पर या ऐसी भूमि पर नहीं उगाना चाहिए जो किसी दोष से दूषित हो।[१२] बुद्धिमानों को कदली को पानी वाली जमीन पर और उपवनों में भी उगाना चाहिए।[१३] कदली को खेतों की सीमाओं पर ऊँची भूमि के भागों में उगाना चाहिए।[१४] हवा आदि से कदली की फसल की रक्षा करनी चाहिए।[१५]

कलमी वृक्ष लगाने में कदली का प्रयोग

कलमी वृक्ष लगाने की प्रक्रिया में कदली का प्रयोग होता है। बृहत्संहिता में बताया गया है कि पनस, अशोक, कदली, जम्बू, लकुच, दाडिम, द्राक्षा, पालीवत, बीजपूर, अतिमुक्तक-इन वृक्ष की शाखाओं को लेकर गोबर में लीपकर कटे हुए विजातीय वृक्ष की मूल या शाखा पर लगाना चाहिए। यह कलम का प्रकार है-

'पनसाशोककदलीजम्बूलकुचदाडिमाः।
द्राक्षापालीवताश्चैव बीजपूरातिमुक्तकाः।।
एते द्रुमाः काण्डरोप्या गोमयेन प्रलेपिताः।
मूलोच्छेदेऽथवा स्कन्धे रोपणीयाः परं ततः'।।[१६]

अन्य वृक्षों पर कदली का प्रभाव

कदली के पत्तों, सरसों, शफरी प्रजाति की मछली की धूनी दिए जाने पर पेड़ कम समय में ही फूल व फल देने लगते हैं।[१७]

आहार की दृष्टि से कदली का प्रयोग

आहार की दृष्टि से कदली के सभी अंग यथा जड़, तना, फूल आदि कच्चे हों या पके, स्वादिष्ट और आनंददायक होते हैं। इन्हें ऋषियों द्वारा उपभोग के लिए उपयुक्त माना गया है।[१८]

---

[१२] *तत्रैव-1/598-600*
[१३] *तत्रैव-2/33*
[१४] *तत्रैव-2/73*
[१५] *तत्रैव-1/595*
[१६] *बृहत्संहिता-55/4-5*
[१७] *वृक्षायुर्वेद-117*
[१८] *काश्यपीयकृषिसूक्ति-2/57-58*

कदली के पर्यायवाची और उनके निहितार्थ

अग्निपुराण के अनुसार मोचा, रम्भा और कदली-ये केले के नाम हैं।[१९]

भावप्रकाशनिघण्टु के अनुसार कदली के पर्यायवाची वारणा, मोचा, अम्बुसारा तथा अंशुमतीफला है - **'कदली वारणा मोचाम्बुसारांऽशुमतीफला'**।[२०]

धन्वन्तरिनिघण्टु के अनुसार सुकुमारा, रम्भा, स्वादुफला, दीर्घपत्रा, निःसारा, मोचा और हस्तिविषाणिका कदली के पर्यायवाची नाम हैं-

'कदली सुकुमारा च रम्भा स्वादुफला मता।
दीर्घपत्रा च निःसारा मोचा हस्तिविषाणिका'।।[२१]

मदलपालनिघण्टु के अनुसार ग्रन्थिनी, मोचा, रम्भा, वीरा, आयतच्छदा, वारणा, वारणबुसा, अम्बुसारा, अंशुमती और फला आदि शब्द केला के पर्यायवाची होते हैं-

'कदली ग्रन्थिनी मोचा रम्भा वीराऽऽयतच्छदा।
वारणा वारणबुसाऽम्बुसारांशुमती फला'।२२

कैयदेवनिघण्टु के अनुसार कालीरसा, हस्तिबुसा, रम्भा, वीरा, अंशुमत्फला, चर्मण्वती, कानुफला, मोचा, हस्तिविषाणिका, बृहत्पुष्पा, मुक्तसारा, ग्रन्थिनी, सुकुमारिका, काष्ठालिका, पलाशिका, मृत्युपुष्पा, हस्तिविषा, कदली, दीर्घपत्रिका, पलाशिका और मृत्युपुष्पा ये पर्याय कदली के हैं-

'कालीरसा हस्तिबुसा रम्भा वीरांशुमत्फला।
चर्मण्वती कानुफला मोचा हस्तिविषाणिका।।
बृहत्पुष्पा मुक्तसारा ग्रन्थिनी सुकुमारिका।
काष्ठालिका हस्तिविषा कदली दीर्घपत्रिका।।
पलाशिका मृत्युपुष्पा तस्या पुष्पं शिलीन्ध्रकम्'।२३

राजनिघण्टु के अनुसार सुफला, रम्भा, सुकुमारा, सकृत्फला, मोचा, गुच्छफला, हस्तिविषाणी, गुच्छदन्तिका, काष्ठीरसा, निःसारा, राजेष्टा, बालकप्रिया, उरुस्तम्भा, भानुफला तथा वनलक्ष्मी-ये सब कदली के पर्यायवाची हैं-

---

[१९] *अग्निपुराण-363/55*
[२०] *भावप्रकाशनिघण्टु-आम्रादिफलवर्ग/33*
[२१] *धन्वन्तरिनिघण्टु-करवीरादि वर्ग/68*
[२२] *मदलपालनिघण्टु-फलादिवर्ग/21*
[२३] *कैयदेवनिघण्टु-ओषधिवर्ग/280-282*

'कदली सुफला रम्भा सुकुमारा सकृत्फला।
मोचा गुच्छफला हस्तिविषाणी गुच्छदन्तिका।।
काष्ठीरसा च निःसारा राजेष्टा बालकप्रिया।
उरुस्तम्भा भानुफला वनलक्ष्मीश्च षोडश'।।२४

जल में इसका विकास होता है या इसके पत्तों में पानी भरा होता है, अतः इसे कदली कहते हैं- **'के जले दलयत्यस्मात् कदलीति प्रकीर्त्तिता'।**२५

अब कदली के किस गुण या प्रकृति आदि के कारण उसके लिए भिन्न-भिन्न पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसका उल्लेख आगे किया जा रहा है[२६]

अंशुमत्फला-इसके फल किञ्चत् कोणीय होते हैं- 'अंशवः कोणाः तद्वन्ति फलान्यस्याः'।
कदली- यह जल की प्रचुर मात्रा वाला पादप है- 'कं जलं, तद्युक्तानि दलान्यस्याः'।
काष्ठीला-इसके फल काष्ठ के समान होते है- 'काष्ठवत् फलमस्या वा'।
गुच्छफला-इसके फल गुच्छ में लगते हैं- 'गुच्छे फलान्यस्याः'।
दीर्घपत्रा-इस पादप के पत्ते लम्बे होते हैं- 'दीर्घाणि पत्राण्यस्याः'।
निःसारा-यह साररहित है, इसमें काष्ठ का अभाव होता है, केवल काण्डाभास होता है, केवल पत्रवृन्त से निर्मित होता है- 'साररहिताः, काण्डाभासः केवलं पत्रवृन्तैरेव निर्मितः'।
पलाशसिका-यह पादप पत्तियों से परिपूर्ण रहता है- 'पत्रमयी'।
बृहत्पुष्पी-इसके पुष्प बृहदाकार होते हैं- 'बृहदाकाराणि पुष्पाण्यस्याः'।
मृत्युपुष्पा- इसके पुष्प इसके मृत्यु का संकेत करते हैं- 'मृत्युसूचकानि पुष्पाण्यस्याः'।
मोचा- कदली वृक्ष के पत्ते के डंठल से जल का स्राव होता है- 'मुञ्चति जलम्'।
रम्भा-जल बहुल प्रदेश में उत्पन्न होने के कारण इसे रम्भा कहते हैं- 'जलबहुलप्रदेश जायमानत्वाद् वा रम्भा'।
वारणबुसा- यह हाथियों के लिए चारा के रूप में प्रयुक्त होता है- 'वारणैः हस्तिभिर्भक्ष्यमाणत्वात्'।
सकृत्फला- इसमें फल केवल एक बार लगता है- 'एकदैव फलति'।
स्वादुफला- इसके फल अत्यन्त स्वादिष्ट होते हैं- 'स्वादूनि फलान्यस्याः'।

---

[२४] *राजनिघण्टु-आम्रादिवर्ग/36-37*
[२५] *प्रियनिघण्टु-हरीतक्यादिवर्ग/227*
[२६] *नामरूपज्ञानम्-पृ. 39-40*

हस्तिविषाणिका- फल शृङ्ग के आकार के तथा बड़े होते हैं- 'बृहत् शृङ्गवत् फलान्यस्याः'।

कदली के विविध प्रकार

राजनिघण्टु में कदली के विभिन्न प्रकारों की चर्चा है।

काष्ठकदली

काष्ठकदली, सुकाष्ठा, वनकदली, काष्टिका, शिलारम्भा, दारुकदली, फलाढ्या, वनमोचा तथा अश्मकदली ये सब काष्ठकदली के नाम हैं। काष्ठकदली रुचिकारक, रक्तपित्त को दूर करने वाली, शीतल, गुरु, मन्दाग्नि उत्पन्न करने वाली, दुष्पच तथा अत्यन्त मधुर होती है-

'काष्ठकदली सुकाष्ठा वनकदली काष्ठिका शिलारम्भा।
दारुकदली फलाढ्या वनमोचा चाश्मकदली च।।
स्यात्काष्ठकदली रुच्या रक्तपित्तहरा हिमा।
गुरुर्मन्दाग्निजननी दुर्जरा मधुरा परा'।।[२७]

गिरिकदली

गिरिकदली, गिरिरम्भा, पर्वतमोचा, अरण्यकदली, बहुबीजा, वनरम्भा, गिरिजा तथा गजवल्लभा ये सब गिरिकदली के नाम हैं। यह मधुर रस युक्त, शीतल, बल तथा वीर्यवर्धक तथा रुचिकारक है। यह प्यास, दाह तथा सूखा रोग को शान्त करने वाली, दुष्पच एवं गुरु है-

'गिरिकदली गिरिरम्भा पर्वतमोचाऽप्यरण्यकदली च।
बहुबीजा वनरम्भा गिरिजा गजवल्लभाभिहिता।।
गिरिकदली मधुरहिमा बलवीर्यविवृद्धिदायिनी रुच्या।
तृद्दित्तदाहशोषप्रशमनकर्त्री च दुर्जरा च गुरुः'।।[२८]

सुवर्णकदली

सुवर्णकदली, सुवर्णरम्भा, कनकरम्भा, पीता, सुवर्णमोचा, चम्पकरम्भा, सुरम्भिका, सुभगा, हेमफला, स्वर्णफला, कनकस्तम्भा, पीतरम्भा, गौरा, गौररम्भा, काञ्चनकदली तथा सुरप्रिया ये सब

---

[२७] राजनिघण्टु-आम्रादिवर्ग/40-41

[२८] तत्रैव-आम्रादिवर्ग/42-43

सुवर्णकदली के नाम हैं। यह मधुर तथा शीतल है और थोड़ा खाने से जाठराग्नि को प्रदीप्त करने वाली है। यह प्यास को शान्त करने वाली, दाह को दूर करने वाली, कफवर्धक, वीर्यवर्धक तथा गुरु है-

'अन्या सुवर्णकदली सुवर्णरम्भा च कनकरम्भा च।
पीता सुवर्णमोचा चम्पकरम्भा सुरम्भिका सुभगा।।
हेमफला स्वर्णफला कनकस्तम्भा च पीतरम्भा च।
गौरा च गौररम्भा काञ्चनकदली सुरप्रिया षड्भूः।।
सुवर्णमोचा मधुरा हिमा च स्वल्पाशने दीपनकारिणी च।
तृष्णापहा दाहविमोचनी च कफावहा वृष्यकरी गुरुश्च'।।[२९]

कौटिलीय अर्थशास्त्र में कदली के विभिन्न प्रयोग

जौ, उड़द, तिल, ढाक, पीलु वृक्ष का क्षार और गाय तथा बकरी के दूध में केला एवं सूरण को एक साथ मिलाकर यदि उसमें सोने–चाँदी की भावना दी जाए तो वे नर्म हो जाते हैं- **'यवमाषतिलपलाशपीलुक्षारैर्गोक्षीराजक्षीर्वा कदलीवज्रकन्दप्रतीवापो मार्दवकरः'।**[३०]

खान से निकाले गए सोने की शुद्धि के लिए कदली का प्रयोग होता है। कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार कदली लता, श्रीवेर और कमलजड़ का क्वाथ बनाकर तब तक उस सुवर्ण को उसमें भिगोया जाना चाहिए, जबतक कि उसका फटना दूर नहीं होता है- **'कन्दलीवज्रकन्दकल्के वा निषेचयेत्'।**[३१]

कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार नीम की छाल, थूहर, केला और तिल के कल्क से पोते हुए शरीर पर बिना किसी पीड़ा के अग्नि जलने लगती है- **'पारिभद्रकत्वग्वज्रकदली-तिलकल्कप्रदिग्धं शरीरमग्निना ज्वलति'।**[३२]

कदली का सांस्कृतिक अनुशीलन

कदली के पौधे एवं फल पवित्र माने जाते हैं तथा विवाह आदि पवित्र एवं धार्मिक अवसरों पर एवं सामान्य देवपूजन में नारियल, सुपारी के साथ इसके फल चढ़ाये जाते हैं। इसके पत्ते का प्रयोग भारतवर्ष विभिन्न धार्मिक अवसरों पर भोजन के लिए थाली के रूप में किए जाता है। अतः इसे श्रेष्ठ एवं पवित्र माने जाता है।[३३] कदली का वृक्ष हिन्दुओं के द्वारा अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। शैव और वैष्णव सभी इसको अत्यन्त पवित्र मानते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस वृक्ष का सम्बन्ध भगवती पार्वती

---

[२९] *राजनिघण्टु-आम्रादिवर्ग/44-46*

[३०] *कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्-पृ.167*

[३१] *तत्रैव-पृ. 175*

[३२] *तत्रैव-पृ. 915*

[३३] *कौटिलीय अर्थशास्त्र में वानस्पतिकी-पृ. 92*

और भगवती लक्ष्मी से है। इसे माता दुर्गा के नव रूपों के लिए भी पवित्र माना जाता था। इसके पत्तों का प्रयोग धार्मिक कार्यों और क्रियाओं के लिए किया जाता है। विवाहादि अवसरों पर या पर्वादि (विशेषकर दीपावली आदि में) के आयोजन में कदली स्तम्भ का प्रयोग अतिप्राचीन काल से होता आ रहा है। ऋतुफल के रूप में इसका प्रयोग नैवेद्य के रूप में भी किया जाता है।

कदली से सम्बन्धित व्रत

कदलीव्रत-यह व्रत भाद्रपद शुक्ल की चतुर्दशी को किया जाता है। इसमें पूर्वाह्ण व्यापिनी चतुर्दशी का ग्रहण किया जाता है। इसमें कदली के वृक्षों की पूजा की जाती है जिससे सौन्दर्य तथा सन्तति की वृद्धि होती है। गुर्जरों में यह व्रत कार्तिक, माघ अथवा वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन समस्त उपचारों तथा पौराणिक मन्त्रों के साथ किया जाता है। वस्तुतः पूजा के दिन शुद्ध मृत्तिका की वेदी पर स्वस्तिक बनाकर उसपर मूल और पत्तों सहित सुन्दर कदली वृक्ष स्थापित किया जाता है तथा उसे पवित्र जल से सींचकर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से पूजा करनी चाहिए। इस प्रकार जब तक उसके फल न आवें, तब तक प्रतिदिन करना चाहिए। इस व्रत का उद्यापन उसी तिथि को उसी मास में अथवा अन्य किसी शुभ मास में किया जाना चाहिए। पूजा में चढ़ाई गई सामग्री आचार्य को देनी चाहिए। यदि कदलीवृक्ष अप्राप्य हो तो उसकी स्वर्णप्रतिमा का पूजन किया जाता है।[३४]

भविष्यपुराण में कहा गया है कि बताया है कि पूजन के अनन्तर क्षमायाचना करके कदलीदल में निवास करने वाली कामदायिनी देवी से प्रार्थना करनी चाहिए-"इन कदली पुष्पों के द्वारा अग्नि प्रज्वलित होती है। मैं बार-बार नमस्कार कर रहा हूँ, मुझे आरोग्य और लावण्य प्रदान करने की कृपा करें"। इस व्रत को सम्पन्न करके वाली स्त्री पुत्र-पौत्र समेत अगाध सुख सौभाग्य के अनुभवपूर्वक आयुष्मती और यशस्विनी रहकर इस भूतल पर पति के साथ विहार करती है। इसी व्रत को स्वर्ग में रहकर गायत्री, कैलास में गौरी, नन्दनवन में इन्द्राणी, श्वेत द्वीप में लक्ष्मी, सूर्यमण्डल में उनकी बली राज्ञी दारुन में अरून्धती, मेरू पर्वत पर स्वाहा, अयोध्यापुरी में सीताजी, हिमालय पर वेदवती और नागपुरी में भानुमती देवी ने सविधान सुसम्पन्न किया है।[३५]

रम्भात्रिरात्रिव्रत –

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को इस व्रत का प्रारम्भ होता है। तीन दिनपर्यन्त इसका अनुष्ठान होना चाहिए। यह व्रत स्त्रियों के लिए है। सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर व्रती स्त्री को कदली के पौधे में पर्याप्त जल छोड़ना चाहिए तथा पौधे के चारों ओर धागा लपेटना चाहिए। चाँदी के कदली का पौधा और उसपर

---

[३४] *हिन्दू धर्म कोश-पृ. 151, व्रतपरिचय - पृ. 70-71*

[३५] *भविष्यपुराण - उत्तरपर्व/92/6, 10-13*

सोने के फल बनवाकर पूजना चाहिए। त्रयोदशी को नक्तविधि से चतुर्दशी को अयाचित विधि से आहार करके पूर्णिमा को उपवास रखना चाहिए। वर्षभर उस वृक्ष को सींचना चाहिए। इस अवसर पर उमा तथा शिव एवं कृष्ण तथा रुक्मिणी की पूजा करनी चाहिए। त्रयोदशी से पूर्णिमा तक क्रमशः 13, 14 तथा 15 आहुतियों से हवन करना चाहिए। इस व्रत के आचरण से सन्तति तथा सौन्दर्य की प्राप्ति होती है तथा वैधव्य से मुक्ति मिलती है। रम्भा का अर्थ कदली है। इसीलिए इस व्रत में कदली से सम्बद्ध कार्यों का विधान है।[३६]

कदली वृक्ष के आरोपण का फल –

घर के समीप कदली वृक्ष को लगाना हितकर माना जाता है। इससे लक्ष्मी का विस्तार होता है।[३७] कदली का आरोपण करने वाला व्यक्ति सात जन्म पर्यन्त दुःख का अनुभव नहीं करता।[३८] वैसे गृहद्वार पर इसका रोपण नहीं करना चाहिए।[३९]

कदली और ज्योतिष

बृहत्संहिता के अनुसार कदली वृक्ष पर फल-पुष्पों की वृद्धि से बकरी, भेड़ आदि की वृद्धि होती है- 'कदलीभिरजाविकं भवति'।[४०] कदली का स्वामी कर्क है।[४१] इन्द्रध्वज के निर्माण में अनेक पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है। इनमें से कदली का वृक्ष भी एक है।[४२] शस्त्रपान प्रकरण में बताया गया है कि यदि कदली की राख में मट्ठा मिलाकर उसमें एक अहोरात्र तक लोहे को छोड़ने पर, बाद में उसको निकाल कर तेज बनाने पर, फिर उससे पत्थर या अन्य लोहे पर भी मारने पर वह नहीं टूटता है-

'क्षारे कदल्या मथितेन युक्ते दिनोषिते पायितमायसं यत्।
सम्यक् शितं चाश्मनि नैति भङ्गं न चान्यलोहेष्वपि तस्य कौण्ढ्यम्'।।[४३]

ज्योतिषशास्त्रियों के अनुसार कदली के पौधे को बृहस्पति के बुरे प्रभाव को दूर करने का वाला माना गया है। इसके लिए किसी शुभ मुहूर्त में कदलीमूल को ससम्मान एकत्रित करके सम्बद्ध व्यक्ति के पास रखना होता है। विवाह में विलम्ब होने पर भी कदलीवृक्ष की पूजा का परामर्श दिया जाता है।

---

[३६] *हिन्दू धर्म कोश-पृ. 545*
[३७] *मत्स्यपुराण-255/24*
[३८] *वृक्षायुर्वेद-20*
[३९] *तत्रैव-29*
[४०] *बृहत्संहिता-29/7*
[४१] *तत्रैव-41/4*
[४२] *तत्रैव-43/57*
[४३] *तत्रैव-50/26*

काव्यों में कदली-

वाल्मीकीय रामायण में कदली–

राम के वनवास की सूचना मिलते ही उनकी माता कौशल्या भूमि पर अचेत होकर गिर पड़ीं। इसी प्रसङ्ग में कदली का प्रयोग प्राप्त होता है। कहा गया है- जिन्होंने जीवन में कभी दुःख देखा ही नहीं, उन्हीं माता कौशल्या को कटी हुई कदली की भाँति अचेत अवस्था में भूमि पर पड़ी देखकर श्रीराम ने हाथ का सहारा देकर उठाया-

'तामदुःखोचितां दृष्ट्वा पतितां कदलीमिव।
रामस्तूत्थापयामास मातरं गतचेतसम्'।।[४४]

भगवान् राम वनगमन के क्रम में एक ऐसे वन में प्रविष्ट हुए जिसमें विराध नाम का राक्षस रहता था। उसने सीता सहित भगवान् राम और लक्ष्मण को देखकर कहा-"मैं विराध नामक राक्षस हूँ और प्रतिदिन ऋषियों के मांसका भक्षण करता हुआ हाथ में अस्त्र-शस्त्र लिए इस दुर्गम वन में विचरता रहता हूँ। यह स्त्री बड़ी सुन्दरी है, अतः मेरी भार्या बनेगी और तुम दोनों पापियों का मैं युद्धस्थल में रक्तपान करूँगा।" दुरात्मा विराध की ये दुष्टता और घमंड से भरी बातें सुनकर जनकनन्दिनी सीता घबरा गयीं और जैसे तेज हवा चलने पर कदली का वृक्ष जोर-जोर से हिलने लगता है, उसी प्रकार वे उद्वेग के कारण थर-थर काँपने लगीं-

'तस्यैवं ब्रुवतो दुष्टं विराधस्य दुरात्मनः।।
श्रुत्वा सगर्वितं वाक्यं सम्भ्रान्ता जनकात्मजा।
सीता प्रवेपितोद्वेगात् प्रवाते कदली यथा'।[४५]

दण्डकारण्य में रामजी का जो आश्रम था वह कदली वृक्षों से घिरा हुआ था- **'एतद् रामाश्रमपदं दृश्यते कदलीवृतम्'।**[४६]

सीताजी के अपहरण के पश्चात् श्रीराम विलाप करने लगे। रघुनाथजी सीता के प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण उनके वियोग में कष्ट पा रहे थे। वे उन्हें न देखकर भी देखते हुए के समान ऐसी बाते कहने लगे, जो विलाप का आश्रय होने से गद्गदकण्ठ के कारण से कठिनता से बोली जा रही थी। उन्होंने कहा-

---

[४४] *वाल्मीकीयरामायण-2/20/33*

[४५] *तत्रैव-3/2/14-15*

[४६] *तत्रैव-3/42/13*

हे देवि! मैं कदली के तनों के तुल्य और कदलीदल से ही छिपे हुए तुम्हारे दोनों उरुओं को देख रहा हूँ। तुम उन्हें छिपा नहीं सकती-

'कदलीकाण्डसदृशौ कदल्या संवृतावुभौ।
ऊरू पश्यामि ते देवि नासि शक्ता निगूहितुम्'।।[४७]

महाभारत में कदली-

महाभारत के वनपर्व में यह वर्णन है कि जब भीमसेन सौगन्धिक कमल लाने जा रहे थे तो उन्होंने गन्धमादन के शिखरों पर एक परम सुन्दर कदली का उपवन देखा जो कई योजन दूर तक फैला हुआ था। वहाँ केले के वृक्ष खम्भों के समान मोटे थे। उनकी ऊँचाई कई ताड़ों के बराबर थी-

'अथापश्यन्महाबाहुर्गन्धमादनसानुषु।।
सुरम्यं कदलीषण्डं बहुयोजनविस्तृतम्।
.....कदलीस्तम्भान् बहुतालसमुच्छ्रयान्'।।[४८]

वहीं निकट में एक सरोवर था। उस सरोवर के एक तीर से दूसरे तीर तक फैले हुए सुवर्णमय कदली के वृक्ष मन्दवायु से विकम्पित होकर मानो उस अगाध जलाशय को पंखा हिला रहे थे-

'काञ्चनैः कदलीषण्डैर्मन्दमारुतकम्पितैः।
वीज्यमानमिवाक्षोभ्यं तीरात् तीरविसर्पिभिः'।।[४९]

उसी कदलीवन में कपिप्रवर हनुमान्, जो उसी कदलीवन में रहते थे उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि भीमसेन वहाँ आ रहे हैं। उन्होंने भीमसेन के हित के लिए स्वर्ग की ओर जाने वाला मार्ग रोक दिया। हनुमान् जी ने यह सोचकर कि भीमसेन इसी मार्ग से स्वर्गलोक की ओर न चले जाएँ, एक मनुष्य के आने-जाने योग्य उस संकुचित मार्ग पर बैठ गए। वह मार्ग केले के वृक्षों से घिरा होने के कारण बड़ी शोभा पा रहा था। उन्होंने अपने भाई की रक्षा के लिए वह राह रोकी थी-

'तं तु नादं ततः श्रुत्वा मुक्तं वारणपुङ्गवैः।
भ्रातरं भीमसेनं तु विज्ञाय हनुमान् कपिः।।

---

[४७] *तत्रैव-3/62/4*

[४८] *महाभारत-वनपर्व/146/50-52*

[४९] *तत्रैव-वनपर्व/146/58*

दिवंगमं रुरोधाथ मार्गे भीमस्य कारणात्।
अनेन हि पथा मा वै गच्छेदिति विचार्य सः।।
आस्त एकायने मार्गे कदलीषण्डमण्डिते।
भ्रातुर्भीमस्य रक्षार्थं तं मार्गमवरुध्य वै'।।[५०]

विशाल भुजाओं वाले भीमसेन ने कदलीवन के भीतर ही एक मोटे शिलाखण्ड पर लेटे हुए वानरराज हनुमान् जी को देखा-

कदलीवनमध्यस्थमथ पीने शिलातले।
ददर्श सुमहाबाहुर्वानराधिपतिं तदा।।[५१]

सुवर्णमयी कदलीवृक्षों के बीच विराजमान महातेजस्वी हनुमान् जी ऐसे जान पड़ते थे, मानो केसरों की क्यारी में अशोकपुष्पों का गुच्छ रख दिया गया हो-

केसरोत्करसम्मिश्रमशोकानामिवोत्करम्।
हिरण्मयीनां मध्यस्थं कदलीनां महाद्युतिम्।।[५२]

कदलीवन का उल्लेख वायुपुराण में भी प्राप्त होता है।[५३]

कालिदाससाहित्य में कदली-

मेघदूत में यक्ष अलकापुरी में स्थित अपने भवन का वर्णन करते हुए कहता है कि वहाँ एक बावली भी है। उस बावली के तीर पर सुन्दर इन्द्रनील मणियों से बनी हुई चोटियों से सम्पन्न और सुनहली कदलियों के परिवेष से दर्शनीय एक क्रीडा पर्वत है। वह अपने मित्र मेघ से कहता है कि हे मित्र! प्रान्त में चमकने वाली बिजली से युक्त तुमको देखकर वह क्रीडा पर्वत मेरी गृहिणी का प्रिय है इस कारण मैं कातर चित्त से उसी का स्मरण करता रहता हूँ-

'तस्यास्तीरे रचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः।
मद्गेहिन्याः इति सखे चेतसा कातरेण प्रेक्ष्योपान्तस्फुरिततडितं त्वां तमेव स्मरामि'।।[५४]

---

[५०] *तत्रैव-वनपर्व/146/65-67*
[५१] *तत्रैव-वनपर्व/146/75*
[५२] *तत्रैव-वनपर्व/146/81*
[५३] *वायुपुराण-38/66-70*
[५४] *मेघदूत-उत्तर/14*

यक्ष आगे कहता है कि मेरी प्रिया का मन मेरे प्रति प्रेमपूर्ण है। मैं इस बात को जानता हूँ। अतः वह कहता है कि हे मेघ! मेरे नाखूनों के चिह्नों से रहित, भाग्यवश विपरिचित हारमय कटिभूषण से शून्य, समागम के अनन्तर मेरे हाथों से मर्दन के योग्य और रस से आर्द्र केले के स्तम्भ के समान सफेद प्रियतमा का बायाँ उरु फड़क उठेगा-

वामश्चास्याः कररुहपदैर्मुच्यमानो मदीयैर्मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या।
सम्भोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानां यास्यत्यूरुः सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम्।।[५५]

रघुवंश

रघुवंश में राम-रावण युद्ध के क्रम में रावण ने लोहे की कीलों से जड़ी हुई शतघ्नी राम पर उठा चलाई जो यमराज के अस्त्र कूटशाल्मलि के समान भयङ्कर थी। उस समय राक्षसों को पूरी आशा हो गई कि इस अस्त्र से राम अवश्य ही समाप्त हो जायेंगे। पर राम ने उस शतघ्नी को रथ तक पहुँचने के पहले ही तिरछी नोकवाले बाणों से ऐसी सरलता से टुकड़े-टुकड़े कर डाला मानो केला छील फेंका हो-

राघवो रथमप्राप्तां तामाशां च सुरद्विषाम्।
अर्द्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीसुखम्।।[५६]

मत्स्यपुराण में हिमालय के अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वहाँ मन को चुरा लेने वाले उत्तम जाति के केले के वृक्ष भी लहलहा रहे थे। कोई-कोई प्रदेश मरकतमणि के तुल्य हरी-हरी घासों से हरे-भरे थे-

तथा च कदलीखण्डैर्मनोहारिभिरुत्तमैः।
तथा मरकतप्रख्यैः प्रदेशैः शाद्वलान्वितैः।।[५७]

इसी पुराण में काशी में स्थित एक उद्यान का वर्णन किया गया है जो अनेक प्रकार के वनस्पतियों से युक्त है। इसी क्रम में कहा गया है कि वहाँ कहीं हंसों के पंख हिलाने से चञ्चल हुए कमलों से युक्त, निर्मल एवं विस्तीर्ण जलराशि शोभा पा रही है। कहीं जलाशयों के तट पर उगे हुए फूलों से सम्पन्न कदली के लतामण्डपों में मयूर नृत्य कर रहे हैं-

हंसानां पक्षपातप्रचलितकमलस्वच्छविस्तीर्णतोयं
तोयानां तीरजातप्रविकचकदलीवाटनृत्यन्मयूरम्।[५८]

कादम्बरी-

---

[५५] *तत्रैव-उत्तर/33*
[५६] *रघुवंश-12/96*
[५७] *मत्स्यपुराण-118/37*
[५८] *तत्रैव-180/36*

अगस्त्य आश्रम का वर्णन करते हुए कहा गया है कि 'उस आश्रम के चारों ओर सुग्गों के समान हरे-हरे केलों की धनी बाड़ लगी हुई थी जिसकी घनी हरियाली से वहाँ कुछ-कुछ अन्धकार सा छाया रहता था'-'**....दिशि दिशि शुकहरितैश्च कदलीवनैः श्यामलीकृतपरिसरं...**'।[५९]

शाल्मलीवृक्ष के वर्णन के प्रसंग कहा गया है कि 'शाल्मली वृक्ष में बनाए गए अपने घोंसलों में रात बिता कर भोजन की खोज में प्रतिदिन प्रातःकाल आकाश में उड़ती सुग्गों की पंक्तियाँ आकाश में उड़ते समय केले के पत्तों के समान अपने हरे-हरे खुले पंखों को मारते हुए ऐसे प्रतीत होते थे मानों सूर्य के धूप में मुरझाये हुए दिशा रूपी कामिनियों के मुख पर पंखे झल रहे हों, अथवा आकाश में हरी-हरी घासों की पट्टियाँ बिछा रहे हों'- **'ते च तस्मिन् वनस्पतावतिवाह्यातोवाह्य निशामात्मनीडेषु प्रतिदिनमुत्थायोत्थायाहारान्वेषणाय नभसि विरचितपङ्क्तयो..... गगनवितैः पक्षपुटैः कदलीदलैरिव दिनकर-खर-निकर-परिखेदितान्यायाशामुखानि वीजयन्तः वियति विसारिणीं शष्पवीथीमिवारचयन्तः, सेन्द्रायुधमिवान्तरिक्षमादधाना विचरन्ति स्म शुकशकुनयः'**।[६०]

जाबाली का आश्रम का वर्णन करते हुए कहा गया है कि 'वहाँ चंचलता केवल कदली के पत्तों में थी किसी के मन में नहीं'-**'चञ्चलता कदलीदलेषु न मनःसु'**।[६१]

कैलाश पर्वत के एक भाग के अधोदेश में भगवान् शङ्कर का एक शून्य (जनरहित) मन्दिर था। वहाँ थोड़ी-थोड़ी हवा से सञ्चालित कोमल कदली के पत्ते पंखे का काम कर रहे थे-**'तनुवनकम्पितकोमलकदलीदलवीजितैः'**।[६२]

पुण्डरीक के अधिज्वरशमन के निमित्त कपिञ्जल ने वक्षःस्थल पर चन्दन-रस में आर्द्र किया हुआ वल्कल रखकर निर्मल जलबिन्दु टपकाते हुए कदलीपत्र द्वारा उसका पंख किया-**'उरो निहितचन्दनद्रवार्द्रवल्कलस्य स्वच्छसलिलशीकरस्राविणा कदलीदलेन व्यजन-क्रियामन्वतिष्ठम्'**।[६३] चण्डिकावन की भूमि पशुओं के वध देखने के आतङ्क से उत्पन्न ज्वर से मानो कम्पित कदली वनों से व्याप्त थी।[६४]

कदली के औषधीय गुण-

---

[५९] *कादम्बरी-पृ.63-64*
[६०] *तत्रैव-पृ. 74-75*
[६१] *तत्रैव-पृ. 125*
[६२] *तत्रैव-पृ. 384*
[६३] *तत्रैव-पृ. 466*
[६४] *तत्रैव-पृ. 628*

कर्णशूल, प्रवाहिका, व्रणशूल में, मधुमेह, रक्तभाराधिक्य में, वृक्क शोथ वातरोग में विभिन्न रूपों में कदली का प्रयोग होता है। पुष्पों का सत् रक्त में शर्करा प्रमाण कम करता है। यह योनिदोष, रक्तदोष तथा अश्मरी में लाभकारी होता है। श्वास रोग में फल के मध्यभाग को पोलाकर, उसमें कालीमिर्च का चूर्ण भर कर रात भर रखा रहने के बाद प्रातः इसको घी में सेक कर सेवन से अतिलाभ होता है। अपस्मार में काण्ड का रस अति लाभकारी होता है। कच्चे फल का प्रयोग मधुमेह में लाभकारी होता है। व्रण में इसके पके पीले पत्ते साफ कर व्रण पर बाँधकर उस पर पट्टी बाँधने पर मवाद एवं दुर्गन्ध दूर हो जाती है। कष्ट प्रसव में इसके कन्द को कमर में बाँधने से शीघ्र प्रसव होता है, प्रसव पश्चात् कन्द को खोल देना चाहिए। प्रवाहिका में इसके पुष्पों का रस दही के साथ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। रक्तप्रदर में पके हुए केले को शुद्ध घी में मसल कर सेवन से स्त्रियों का रक्तप्रदर नष्ट हो जाता है।[६५]

कदली के पके फल बल्य, रक्तपित्त शामक, संग्राहक तथा जीवनीय हैं। इससे रक्त की मात्रा बढ़ती है, आन्त्र की क्रिया सुधरती है तथा रक्त की अम्लता कम होती है। इसको अतिसारादि में पथ्य के रूप में देते हैं। कच्चे केले का प्रयोग अन्य द्रव्यों के साथ मधुमेह में किया जाता है। इसके फूलों का रस दही के साथ अत्यार्तव में देते हैं। फूलों की सब्जी रक्तपित्त में तथा मधुमेह में देते हैं। काण्ड का रस अपस्मार, अपतन्त्रक आदि वातिक विकारों में देते हैं तथा यह तृषाशामक होता है।[६६] पुराणों, आयुर्वेदिक तथा निघण्टु ग्रन्थों में कदली के औषधीय गुणों की चर्चा प्राप्त होती है। कहीं पर इसके औषधीय गुणों की चर्चा पृथक् रूप में की गई है और कहीं पर अन्य पादपों के साथ। इन सबका का विवेचन आगे किया जा रहा है-

अग्निपुराण

कदली का रस कर्णशूलहारी है।[६७]

गरुडपुराण

लशुन, आर्द्रक, शिग्रू, पारुल्य, मूलक तथा कदली का गुनगुना रस कर्णरोग को दूर करने का उत्तम उपचार है-

'लशुनार्द्रकशिग्रूणां पारुल्या मूलकस्य च।
कदल्याश्च रसः श्रेष्ठः कदुष्णः कर्णापूरणे'।।[६८]

---

[६५] *आयुर्वेद का प्राण : वनौषधि विज्ञान-पृ. 304*

[६६] *भावप्रकाशनिघण्टु-आम्रादिफलवर्ग/पृ.557-558*

[६७] *अग्निपुराण-285/71*

[६८] *गरुडपुराण-171/47*

कदली कफविनाशक वर्ग के अन्तर्गत आता है।

शतपुष्पा, वचा, कुष्ठ, हरिद्रा, शिग्रु, रसाञ्जन, सौवर्चल (काला नमक), यवक्षार, सर्जक (तालवृक्ष का रस), सैन्धव (सेंधा नमक), पिप्पली, विडंग तथा मोथा-इन सभी औषधियों को समान भाग में लेकर उनसे चार गुना मधु, बिजौरा, नींबू और केला का रस एकत्रित करना चाहिए। तदनन्तर इन सभी औषधियों को मिलाकर उनसे तिल के तेल की सिद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार तैयार किए गए पाक के प्रयोग से निश्चित ही स्त्रियों का स्रावादिक रोग दूर हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं-

'शतपुष्पा वचा कुष्ठं दारुशिग्रु रसायनम्।।
सौवर्चलं यवक्षारं तथा सर्जकसैन्धवम्।
तथा ग्रन्थि विडं मुस्तं मधुयुक्तं चतुर्गुणम्।।
मातुलुङ्गरसस्तद्वत्कदल्याश्च रसो हि तैः।
पक्वतैलं हरेदाशु स्रावादींश्च न संशयः'।।[६९]

हरिताल, शंखचूर्ण, कदली के पत्ते का भस्म- इनका उबटन लगाने से बाल गिर जाते हैं-

'हरितालं शङ्खचूर्णं कदलीदलभस्मना।
एतद्व्येण चोद्वर्त्य लोमशातनमुत्तमम्'।।[७०]

रजनी (हरिद्रा) और कदली के क्षार का लेप सिध्मरोग का विनाशक है-**'रजनीकदलीक्षारलेपः सिध्मविनाशनः'**।[७१] कदली का पत्ता और यवक्षार जल में सिद्ध करके तैयार किया गया पेय पीने से उदरजनित समस्त विकार दूर हो जाते हैं-

'कदलीपत्रक्षारं तु पानीयेन प्रसाधितम्।
तस्यादनाद्विनश्यन्ति उदरव्याधयोऽखिलाः'।।[७२]

कदली के जड़ को गुड़ और घी में मिलाकर, अग्नि पर पकाकर काया जाए तो वह उदरजनित कृमियों को विनष्ट कर देता है-

---

[६९] *तत्रैव-179/6-8*
[७०] *तत्रैव-181/7*
[७१] *तत्रैव-184/1*
[७२] *तत्रैव-190/7*

'कदल्या मूलमादाय गुडाज्येन समन्वितम्।
अग्निना साधितं जग्धमुदरस्थक्रिमीन् हरेत्'।।[७३]

कदली का क्षार और हरिद्रा का लेप भी सिध्म रोग का विनाशक है। कदली और अपामार्ग का क्षार एरण्ड तेल में मिलाकर उस लेप का अभ्यङ्ग करने से तत्काल सिध्म रोग नष्ट हो जाता है-

'कदलीक्षाररसयुक्ता हरिद्रा शिल्हिकापहा।
रम्भापार्गयोः क्षार एरण्डेन विमिश्रितः।।
तदभ्यङ्गान्महादेव सद्यः सिध्म विनश्यति'।।[७४]

सूखी मूली और सोंठ का क्षार तथा हींग, हल्दी, सोया, वच, कूट, दारु, हल्दी, सहिजन, रसाञ्जन, काला नमक, यवक्षार, समुद्रफेन, सेंधा नमक, ग्रन्थिक, विडङ्ग, नागरमोथा, मधु, चार गुना शुक्तिभस्म, बिजौरा नींबू का रस और केले का रस लेकर इन्हीं से सरसों का तेल सिद्ध करना चाहिए। यह सिद्ध तेल कर्णशूल दूर करने का अत्युत्तम उपाय है। कान में इसको डालने से बहरापन, कर्णनाद, पीबस्राव तथा कृमिदोष सद्यः विनष्टहो जाता है। इसका नाम क्षार तैल है। इस तेल से मुख तथा दाँतों की गन्दगी भी दूर हो जाती है-

'शुष्कमूलकशुण्ठीनां क्षारो हिङ्गुलनागरम्।
शतपुष्पा वचा कुष्ठं दारुशिग्रुरसाञ्जनम्।।
सौवर्चलं यवक्षारं सामुद्रं सैन्धवं तथा।
ग्रन्थिकं विडमुस्तं च मधु शुक्तं चतुर्गुणम्।।
मातुलुङ्गरसश्चैव कदलीरस एव च।
तैलमेभिर्विपक्तव्यं कर्णशूलापहं परम्।।
वाधिर्यं कर्णनादश्च पूयस्रावश्च दारुणः।
पूरणादस्य तैलस्य क्रिमयः कर्णयोर्हर।।
सद्यो विनाशमायान्ति शशाङ्ककृतशेखर।
क्षारतैलमिदं श्रेष्ठं मुखदन्तमलापहम्'।।[७५]

---

[७३] *तत्रैव-190/8*

[७४] *तत्रैव-190/19*

[७५] *तत्रैव-192/15-19*

भावप्रकाशनिघण्टु

कदली के कच्चे फल स्वादिष्ट, शीतल, विष्टम्भक, कफकारक, गुरु, स्निग्ध एवं पित्त, रक्तविकार, प्यास, दाह, क्षत, क्षय तथा वात को दूर करने वाले होते हैं। इसके पके फल स्वादिष्ट, शीतल, विपाक में मधुररस युक्त, वृष्य (वीर्यवर्धक), बृंहण (रस-रक्तादिवर्धक), रुचि तथा मांस को बढ़ाने वाले एवं भूख, प्यास, नेत्ररोग तथा प्रमेह के नाशक हैं-

'मोचाफलं स्वादु शीतं विष्टम्भि कफकृद् गुरु।।
स्निग्धं पित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित्।
पक्वं स्वादु हिमं पाके स्वादु वृष्यञ्च बृंहणम्।।
क्षुत्तृष्णानेत्रगदह्रन्मेहघ्नं रुचिमांसकृत्'।[७६]

कदली का कन्द शीतल, बलकारक, बालों के लिए हितकर, जठराग्निवर्धक, मधुररसयुक्त, रुचिकारक एवं अम्लपित्त तथा दाह को नष्ट करने वाला होता है-

'शीतलो कदलीकन्दो बल्यः केश्योऽम्लपित्तजित्।
वह्निकृद्दाहहारी च मधुरो रुचिकारकः'।।[७७]

धन्वन्तरिनिघण्टु

कदली मधुर, शीतवीर्य, रमणीक, पित्तशमनकारक और कोमल होती है। इसका फल मधुर, कसैला तथा कुछ शीतवीर्य होता है। यह रक्तपित्तदोष को हरने वाला, वृष्य, रुच्य, कफकर तथा गुरु होता है। कदलीकन्द वायुकारक, रूखा, शीतवीर्य, रक्तस्राव, कृमि और कुष्ठ रोग को नष्ट करने वाला होता है-

'कदली मधुरा शीता रम्या पित्तहरा मृदुः।
कदल्यास्तु फलं स्वादु कषायं नाति शीतलम्।।
रक्तपित्तहरं वृष्यं रुच्यं कफकरं गुरु।
कन्दस्तु वातलो रूक्षः शीतोऽसृक्कृमिकुष्ठनुत्'।।[७८]

मदनपालनिघण्टु

कदली शीतल, योनिविकार, पथरी, रक्तपित्तविनाशक है। इसका कन्द शीतल, बलकारक, केशवर्धक, कफ, पित्त और रक्तविकार निवारक होता है। इसका फल मधुर, शीतल, मलावरोधक,

---

[७६] *भावप्रकाशनिघण्टु-आम्रादिफलवर्ग/33-34*
[७७] *तत्रैव-शाकवर्ग/105*
[७८] *धन्वन्तरिनिघण्टु-करवीरादि वर्ग/69-70*

कफकारक, भारी और स्निग्ध होता है। इससे पित्तरक्त, जलन, पिपासा, वात, क्षत और क्षय का उन्मूलन होता है-

'कदली योनिदोषाश्मरक्तपित्तहरा हिमा।
तत्कन्दः शीतलो बल्यः केश्यः पित्तकफास्रजित्।।
तत्फलं मधुरं शीतं विष्टम्भि कफकृद्गुरु।
स्निग्धं पित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित्'।।[७९]

कैयदेवनिघण्टु

कदली गुरु, शीतवीर्य, स्निग्ध, मधुर, रक्तपित्तनाशक, योनिदोष को दूर करने वाला तथा रक्तरोधक होता है। इसका काण्ड गुरु एवं शीतल होता है। इसका कन्द बलवर्धक, कफपित्तनाशक, गुरु, वातकारक, रक्तरोधक, कषाय, रूक्ष, शीतल है तथा कर्णशूल, रजोदोष एवं सोमरोग को नष्ट करता है-

'मोचा गुर्वी हिमा स्निग्धा स्वाद्वी पित्तास्रनाशनी।।
योनिदोषहरास्रघ्नी तत्काण्डं गुरु शीतलम्।
बल्यः कदल्याः कन्दः स्यत् कफपित्तहरो गुरुः।।
वातलो रक्तशमनः कषायो रूक्षशीतलः।
कर्णशूलं रजोदोषं सोमरोगं नियच्छति'।।[८०]

कदली का जल शीतल, ग्राही, तृष्णा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कर्णरोग, अतिसार, अस्थिस्राव, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह और रक्तप्रदर को नष्ट करता है-

'रम्भातोयं शीतलं ग्राहि तृष्णाकृच्छान् मेहान् कर्णरोगातिसारान्।
अस्थिस्रावं स्फोटकं रक्तपित्तं दाहं हन्यादस्रयोनिं विशेषात्'।।[८१]

कदली का पुष्प तिक्त एवं कषाय, ग्राही, दीपन, उष्णवीर्य, कफनाशक एवं बलवर्धक होता है। इसकी जटा आदि के गुण पुष्प के समान ही होते हैं-

'कदलीकुसुमं तिक्तं कषायं ग्राहिदीपनम्।
उष्णवीर्यं बलासघ्नं तादृशास्तत् सटादयः'।।[८२]

---

[७९] *मदलपालनिघण्टु-फलादिवर्ग/22-23*

[८०] *कैयदेवनिघण्टु-ओषधिवर्ग/282-284*

[८१] *तत्रैव-ओषधिवर्ग/285*

[८२] *कैयदेवनिघण्टु-ओषधिवर्ग/286*

कदली का कच्चा फल प्यास, रक्तपित्त, नेत्ररोग, प्रमेह को नष्ट करने वाला होता है। यह सांग्राहिक, तिक्त एवं कषाय, रूक्ष एवं रक्तातिसार को दूर करता है। इसका मध्यम अर्थात् अधपका फल ईषत्कषाय एवं मधुररस, गुरु तथा अग्नि को मन्द करने वाला होता है। इसका छिलका कटु, तिक्त तथा लघु होता है। इसका पका फल रस एवं विपाक में मधुर, किञ्चित् कषाय, शीतवीर्य, गुरु, मांसल, कफकारक, रुचिकारक, शुक्रजनक, विष्टम्भी, बृहंण (धातुवर्धक), स्निग्ध, क्षतक्षय, क्षुधा, पिपासा, वातपित्त, रक्तस्राव तथा दाह को नष्ट करने वाला होता है-

'तृड्रक्तपित्ताक्षिगदप्रमेहान् फलं कदल्यास्तरुणं निहन्ति।
सांग्राहिकं तिक्तकषायरूक्षं रक्तातिसारं शमयेज्ज्वरञ्च।।
ईषत्कषायमधुरं मध्यमं कदलीफलम्।
गुर्वग्निसादकृत् त्वक् तु कटुतिक्तरसा लघुः।।
मोचं पक्वं स्वादु पाके सकषायं हिमं गुरु।
मांसलं श्लेष्मलं रुच्यं वृष्यं विष्टम्भि बृहंणम्।।
स्निग्धं क्षतक्षयक्षुत्तृड्वातपितास्रदाहजित्'।[८३]

कृष्णकदली के फल रुचिकारक, कषाय एवं मधुर, प्रमेह, पित्तविकार एवं तृषा को हरने वाले, वातकारक, बृंहण एवं लघु होते हैं-

'कृष्णरम्भाफलं रुच्यं कषायं मधुरं तथा।
मेहं पित्तं तृषां हन्ति वातलं बृहंणं लघु'।।[८४]

राजनिघण्टु

कदली का बाल फल थोड़ा मधुर तथा कषायरस युक्त होता है। इसका नाल पित्तनाशक, शीतल तथा रुचिकर होता है। इसका पुष्प भी उसी के अनुरूप गुणवाला होता है। इसका कन्द क्रिमिरोग नाशक है और पत्ता शूल को शान्त करने वाला है। कदली का पका फल कषाय तथा मधुर रस युक्त, बलकारक तथा शीतल है और पित्त तथा रक्तविकार को नष्ट करने वाला है। यह अत्यन्त गुरु है तथा मन्दाग्नि वालों के लिए अपथ्य है। यह शीघ्र ही वीर्य को बढ़ाने वाला, थकावट को दूर करने वाला, तृष्णा शामक, कान्तिप्रद, प्रज्वलित जाठराग्नि वालों के लिए सुखकारक, कफज रोगों को उत्पन्न करने वाला तृप्तिकारक तथा दुष्पच है-

---

[८३] *तत्रैव-ओषधिवर्ग/287-289*
[८४] *तत्रैव-ओषधिवर्ग/290*

'बालं फलं मधुरमल्पतया कषायं पित्तापहं शिशिररुच्यमथापि नालम्।
पुष्पं तदप्यनुगुणं क्रिमिहारि कन्दं पर्णञ्च शूलशमकं कदलीभवं स्यात्।।
रम्भापक्वफलं कषायमधुरं बल्यञ्च शीतं तथा
पित्तं चास्रविमर्दनं गुरुतरं पथ्यं न मन्दानले।
सद्यः शुक्रविवृद्धिदं क्लमहरं तृष्णापहं कान्तिदं
दीप्ताग्नौ सुखदं कफामयकरं सन्तर्पणं दुर्जरम्'।।[८५]

प्रियनिघण्टु

कदली का कच्चा फल कषाय एवं उत्तम स्तम्भन है। इसका फल मधुर, गुरु, वृष्य एवं बृहंण है। पत्रमय काण्ड का जल शीत एवं अत्यन्त मूत्रल है। यह रक्तपित्त, तृष्णा, शोष और सन्ताप को दूर करता है-

'कदल्याः फलमामं स्यात् कषायं स्तम्भनं परम्।
तदेव पक्वं मधुरं गुरु वृष्यं च बृंहणम्।।
पत्रकाण्डोदकं शीतं परं मूत्रविवर्धनम्।
रक्तपित्तापहं तृष्णाशोषसन्तापनाशनम्'।।[८६]

चरकसंहिता

कदली चन्दनादितैल का प्रमुख अवयव है। यह तैल मालिश करने पर दाह और ज्वर का नाश करता है।[८७] दाहशान्ति के लिए बताया गया है - जल में उत्पन्न होने वाले पत्र तथा पुष्प, शीतल क्षौम (अलसी के तन्तुओं से निर्मित वस्त्र अथवा रेशमी) वस्त्रों को धारण करना, केले के पत्ते, लालकमल एवं नीलकमल के पत्ते बिछौनों तथा आसनों पर बिछाने और ओढ़ने के लिए श्रेष्ठ कहे गए हैं-

'पत्राणि पुष्पाणि च वारिजानां क्षौमं च शीतं कदलीदलानि।
प्रच्छादनार्थं शयनासनानां पद्मोत्पलानां च दलाः प्रशस्ताः'।।[८८]

रक्तार्श की चिकित्सा के लिए कहा गया है कि केले की नई पत्तियों पर शीतल जल को छिड़ककर बार-बार गुदप्रदेश को ढकना चाहिए। कदलीपत्र आदि को बदलते रहना चाहिए।[८९] कदली न्योग्रोधादि

---

[८५] *राजनिघण्टु-आम्रादिवर्ग/38-39*
[८६] *प्रियनिघण्टु-हरीतक्यादिवर्ग/228-229*
[८७] *चरकसंहिता-चि./3/258*
[८८] *तत्रैव-चि./4/107*
[८९] *तत्रैव-चि./14/218*

लेप का प्रमुख अवयव है। यह लेप अत्यन्त शीतल होता है। आग के समान सन्ताप देने वाले विसर्प व्रणों पर इसका लेप करने से रोगी को शान्ति का लाभ होता है।[९०] कफज मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा के लिए छोटी इलायची के चूर्ण को मधु के साथ मिलाकर चाटना चाहिए, उसके बाद कदली के रस को पीना चाहिए। कदली के रस से तात्पर्य कदली के नाल के रस से है क्योंकि यह मूत्रल होता है।[९१]

सुश्रुतसंहिता-

सुश्रुतसंहिता के अनुसार कदली रोध्रादिगण के अन्तर्गत आता है। मेद और कफ को दूर करने वाला रोध्रादिगण योनिदोष को दूर करता है, अतिसार आदि में स्तम्भन करने वाला, व्रण के लिए हितकर और विषहर है।[९२] कदली कि तथा श्योनाक की भस्म और आल, नमक तथा शमी के बीजों को शीतल जल में पीसकर लगाने से बाल साफ (शातन) हो जाते हैं-

'कदलीदीर्घवृन्ताभ्यां भस्मालं लवणं शमी।
बीजं शीतोदपिष्टं वा रोमशातनमाचरेत्'।।[९३]

कदली कल्याणक लवण का मुख्य घटक है। यह लवण वातरोगों, गुल्म, प्लीहा, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अर्श, अरोचक से पीड़ितों और कासादि उपद्रवग्रस्तों में पान-भोजनादि के रूप में प्रयुक्त होता है।[९४] कदली विडङ्गादितैल का प्रमुख अवयव है। इस तैल की अनुवासन बस्ति देने से प्लीहरोग, उदावर्त, वातरक्त, गुल्म, आनाह, कफज व्याधियाँ, प्रमेह, शर्करा और अर्श नष्ट होते हैं।[९५] कर्णपूरण के लिए लहसुन, अदरक, शिग्रु, शोभाञ्जन, मूलक और कदली-इनका स्वरस कुछ गरम कर प्रयोग में लाना चाहिए।[९६] शिरीष, कदली और कुन्द के पुष्पों को एवं पिप्पली के चूर्ण को चावलों के जल के साथ पीने से श्वासरोग पूर्णतः नष्ट हो जाता है-

'शिरीषकदलीकुन्दपुष्पं मागधिकायुतम्।
तण्डुलाम्बुयुतं पीत्वा जयेच्छ्वासानशेषतः'।।[९७]

---

[९०] *तत्रैव-चि./21/72*
[९१] *तत्रैव-चि./26/55*
[९२] *सुश्रुतसंहिता-सू./38/15*
[९३] *तत्रैव-चि./1/106*
[९४] *तत्रैव-चि./4/32*
[९५] *तत्रैव-चि./37/39-42*
[९६] *तत्रैव-उ./21/17*
[९७] *तत्रैव-उ./51/37*

अष्टाङ्गहृदय-

कदली के पके फल को मठा, दही अथवा ताड़ के फल के साथ नहीं खाना चाहिए।[९८] अष्टाङ्गहृदय के अनुसार कदली रोध्रादिगण के अन्तर्गत पठित है। यह गण मेदोदोष, कफज रोग, योनिविकारनाशक, मलस्तम्भक, वर्ण को उज्ज्वल करने वाला तथा विषविकार को नष्ट करता है-

'एष रोध्रादिको नाम मेदः कफहरो गणः।
योनिदोषहरः स्तम्भी वर्ण्यो विषविनाशनः'।।[९९]

तिलनाल का क्षार, अपामार्ग का क्षार, कदली का क्षार, पलाश का क्षार तथा जौखार इनको मात्रा के अनुसार लेकर भेड़ के मूत्र के साथ शर्करा तथा अश्मरी रोग में पीना चाहिए-

'तिलापामार्गकदलीपलाशयवसम्भवः।।
क्षारः पेयोऽविमूत्रेण शर्करास्वश्मरीषु च'।[१००]

यदि उदररोग में वातदोष, पार्श्वशूल, पार्श्वस्तम्भ तथा हृदय में जकड़न इन लक्षणों को पैदा कर देता है तो टिण्टुक, बला, पलाश, तिलनाल, कदली, अपामार्ग, अरणी-इन द्रव्यों के अलग-अलग क्षारों को डालकर पकाए गए तैलों में से किसी एक का मात्रानुसार पान कराना चाहिए।[१०१]

कदल्यादितैल का सेवन करने से कफ और वात दोषज प्लीहाविकार शान्त हो जाता है-

'कदल्यास्तिलनालानां क्षारेण क्षुरकस्य च।।
तैलं पक्वं जयेत्पानात्प्लीहानं कफवातजम्'।[१०२]

पित्तज विसर्परोग में बरगद आदि वृक्षों की नीचे की ओर लटकने वाली कोमल जड़ें, कदली के तना का मध्य भाग तथा कमल के जड़ की गाँठ को पीसकर, शतधौतघृत में भलीभाँति मिलाकर लेप करना चाहिए-

'न्यग्रोधपादास्तरुणाः कदलीगर्भसंयुता।।
बिसग्रन्थिश्च लेपः स्याच्छतधौतघृताप्लुतः'।[१०३]

---

[९८] *अष्टाङ्गहृदय-सू./7/35*
[९९] *तत्रैव-सू./15/26-27*
[१००] *तत्रैव-चि./11/31-32*
[१०१] *तत्रैव-चि./15/45-46*
[१०२] *तत्रैव-चि./15/95-96*
[१०३] *तत्रैव-चि./18/12-13*

कदली के रस के स्वरस को अलग-अलग गुनगुना करके कान में डालना चाहिए। इससे कफजकर्णशूल का शमनहोता है-'**कदल्याः स्वरसः श्रेष्ठः कदुष्णः कर्णपूरणे'** ।।[१०४]

वैद्यमनोरमा

कदलीफल को गोमूत्र में पकाकर या अंगारों पर भूनकर अथवा निर्धूम अग्नि पर पकाकर रोगी को खिलाना चाहिए। इसके प्रयोग करने से श्वासरोग का शीघ्र शमन हो जाता है-

'श्वासायासविनाशार्थमाशयेत् कदलीफलम्।
श्रृतं मूत्रेऽथवा भृष्टमथवाऽङ्गारपाचितम्' ।।[१०५]

कोथ से उत्पन्न दुर्गन्ध एवं पूय को नष्ट करने के लिए वैद्य को चाहिए कि वह केले के पत्ते को लेकर तिलतैल में पकाकर उपनाह-विधि से व्रण पर प्रयोग करना चाहिए। इससे शीघ्र ही व्रण का सड़ना, पूय और दुर्गन्ध आदि दूर हो जाते हैं।[१०६]

सन्दर्भग्रन्थसूची

- उपाध्याय पंडित बाबूराम (अनुवादक), भविष्यपुराण (तृतीयखण्ड), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद, 2003
- गैरोला वाचस्पति (व्याख्याकार), कौटिलीय-अर्थशास्त्रम्, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1977
- चतुर्वेदी आचार्य पं० सीताराम, कालिदास ग्रन्थावली, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, सं० 2063 विक्रमाब्द
- जूगनू डा० श्रीकृष्ण (संपादक और व्याख्याकार), वृक्षायुर्वेद, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 2010
- झा पण्डित श्री अच्युतानन्द (व्याख्याकार), बृहत्संहिता, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009
- त्रिपाठी डा० इन्द्रदेव (व्याख्याकार), राजनिघण्टु, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2006
- त्रिपाठी डा० ब्रह्मानन्द (व्याख्याकार), अष्टाङ्गहृदयम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2009
- त्रिपाठी डा० ब्रह्मानन्द (व्याख्याकार), चरकसंहिता, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2009
- त्रिपाठी पं. हरिहर प्रसाद (सम्पादक और व्याख्याकार), धन्वन्तरिनिघण्टुः, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2008

---

[१०४] *तत्रैव-उ./18/12*

[१०५] *वैद्यमनोरमा-3/17*

[१०६] *तत्रैव-16/105*

- पाण्डेय डा० राजबली, हिन्दू धर्मकोश, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2003
- पाण्डेय साहित्याचार्य पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री (अनुवादक), महाभारत, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि०सं० 2065
- ब्रह्मवर्चस, आयुर्वेद का प्राण : वनौषधि विज्ञान, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा, 2008
- रेग्मी आचार्य श्रीशेषराजशर्मा (व्याख्याकार), मेघदूतम्, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2007
- शर्मा डा० अनन्तराम (व्याख्याकार), सुश्रुतसंहिता, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006
- शर्मा आचार्य प्रियव्रत एवं शर्मा डा० गुरुप्रसाद (सम्पादक एवं व्याख्याकार), चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 2006
- शर्मा प्रियव्रत, नामरूपज्ञानम्, सत्यप्रिय प्रकाशन, वाराणसी, 2000
- शास्त्री श्री कृष्णमोहन (व्याख्याकार), कादम्बरी, चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी, 1961
- श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि०सं० 2067
- संक्षिप्त गरुडपुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि०स० 2067
- सिंह डा० अवधेश नारायण, कौटिलीय अर्थशास्त्र में वानस्पतिकी, विजयलक्ष्मी पब्लिकेशन, वाराणसी, 1989
- Ayachit SM (Trans.), Kashyapiyakrishisukti, Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, 2002
- Sadhale Nalini (Trans.), Vishvavallabha, Asian Agri-History Foundation, Secunderabad, 2004

~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~